अंतरी पेटवू ज्ञानज्योत

उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगांव

REVISED SYLLABUS FOR M.A.PART-II HINDI

एम.ए. भाग-2 हिन्दी

(With effect from July, 1998)

प्रश्नपत्र क्र. 5 :- सामान्य स्तर : आधुनिक काव्य

उद्देश्य :-

1) आधुनिक हिन्दी काव्य की प्रवृत्तियों का परिचय देना.
2) आधुनिक काल के महाकाव्य, खंडकाव्य, गीतिकाव्य, नई कविता, हिन्दी गजल आदि विधाओं की प्रवृत्तियों के एवं उनके तात्विक स्वरूप का ज्ञान कराना तथा इन विधाओं के विकासक्रम का परिचय कराना.
3) हिन्दी की आधुनिक काव्य विधाओं के विकास के परिप्रेक्ष्य में उनका अध्ययन तथा समीक्षात्मक आस्वादन की दृष्टि देना.

पाठ्य पुस्तकें :-

1) कामायनी - जयशंकर प्रसाद-प्रकाशक (भारती भंडार इलाहाबाद).
(चिंता, श्रध्दा और आनन्द सर्गोका अध्ययन)
2) आत्मजयी - कुंवर नारायण, (भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली)
3) कुरुक्षेत्र - रामधारीसिंह "दिनकर" (उदयाचल, राजेन्द्रनगर, पटना-4)
4) कवितान्तर - संपादक डॉ. जगदीश गुप्त, (ग्रंथम, रामबाग कानपुर)

निम्नलिखित कवि और उनकी कविताएँ.

1) अज्ञेय - सभी कविताएं.
2) मुक्तिबोध - "मुझे पुकारती हुई" - कविता को छोड़कर शेष सभी कविताएं.
3) नरेश मेहता - सभी कविताएं.
4) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना - सभी कविताएँ
5) जगदिश गुप्त - "आकांक्षा" कविता को छोड़कर शेष सभी कविताएं.

5) साये में धूप - दुष्यन्त कुमार - राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली.

निम्नलिखित गजलों का अध्ययन -

1) कहाँ तो तय था चिरॉगा 2) ये सारा जिस्म 3) भूख है तो सब्र कर 4) कहीं पे धूप की चादर 5) मत कहो आकाश में 6) चाँदनी छत पे चल रही 7) हो गई पीर पर्वत सी 8) आज सड़कों पर 9) मेरे गीत तुम्हारे पास 10) बाढ की संभावनाएँ 11) ये जुबा हमसे 12) तुमको निहारता हूँ 13) रोज जब रात को 14) एक कबूतर चिठ्ठी लेकर 15) तुमने इस तालाब में 16) एक गुड़िया की कई 17) होने लगी है जिस्म में 18) मैं जिसे ओढता हूँ 19) अब किसी को भी नजर 20) तुम्हारे पाँवो के नीचे.

संदर्भ ग्रंथ :-

1) कामायनी कला और दर्शन - त्रिपाठी राममूर्ति प्र. साहित्य भवन , इलाहाबाद.
2) कामायनी की भाषा - रमेशचंद्र गुप्त, प्र. अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली.
3) कामायनी प्रेरणा और परिपाक - डॉ. रमाशंकर तिवारी, ग्रंथम कानपुर.
4) कामायनी विमर्श - डॉ. भगीरथ दीक्षित प्र. समुदाय प्रका. मुंबई.
5) कामायनी सौंदर्य - डॉ. फतहसिंह, प्र. भारती भंडार, इलाहाबाद.
6) कामायनी मूल्यांकन और मूल्यांकन - डॉ. इन्दनाथ मदान प्र. नीलाभ, इलाहाबाद.
7) कामायनी दर्शन - प्रो. कन्हैयालाल सहल - प्र. आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली.
8) कामायनी एक पुनर्विचार - गजानन माधव मुक्तिबोध - किरांशु प्रका. जबलपुर.
9) कामायनी का काव्यशास्त्रीय विश्लेषण - डॉ. स्नेहलता गुप्त, प्र. विद्या प्रका. कानपुर.
10) कामायनी का आनंदवाद - डॉ. नीलमणी उपाध्याय, जयपुर पुस्तक सदन.
11) दिनकर का वीर काव्य -धर्मपाल सिंह आर्य - अभिनव प्रका. दिल्ली.
12) दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय भावना - डॉ. शिवकांत गोस्वामी, प्रगति प्रका. आगरा.
13) युगचारण दिनकर - डॉ. सावित्री सिन्हा.
14) रामधारीसिंह दिनकर - मन्मथनाथ गुप्त.
15) राष्ट्रीय कवि दिनकर और उनकी साहित्य साधना - सं. प्रतापचन्द जैसवाल.
16) दिनकर की सृष्टि और दृष्टि - डॉ. छोटेलाल दीक्षित.
17) दिनकर के काव्य - लीलाधर त्रिपाठी.
18) नये प्रतिनिधि कवि - हरिचरण शर्मा पंचशील प्रका. कानपुर.
19) नयी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर - डॉ. संतोषकुमार तिवारी, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा.
20) नयी कविता स्वरूप और समस्याएँ - डॉ. जगदीश गुप्त, भारतीय ज्ञानपीठ प्रका.
21) काव्य परंपरा और नई कविता की भूमिका - कमलकुमार.
22) आधुनिक हिन्दी खण्डकाव्य - डॉ. एम.तंकमणि अम्मा.
23) समकालीन प्रतिनिधी कवि - अनन्त कीर्ति तिवारी, साहित्य रत्नालय, कानपुर.
24) स्वातत्र्योत्तर हिन्दी काव्य युगीन संदर्भ - डॉ. सुभद्रा पेठणकर, प्र. विद्याविहार, कानपुर.
25) आधुनिक कवियों की जीवन दर्शन - डॉ. परशुराम शुल्क विरही.
26) मुक्तिबोध का साहित्य विवेक और उनकी कविता - डॉ. लल्लन राय.
27) नरेश मेहता का काव्य - विमर्श मूल्यांकन, प्रभाकर शर्मा.
28) दुष्यन्तकुमार और उनका साहित्य - डॉ. हरिचरण शर्मा.
29) गजल एक यात्रा - सूर्य प्रकाश शर्मा - विश्वभारती प्रका. नागपूर.
30) दुष्यन्तकुमार रचनाएँ और रचनाकार - गणेश अष्टेकर, पंचशील प्रका. कानपुर.
31) हिन्दी गजल उद्भव और विकास - डॉ. रोहिताश्व अस्थाना - सामयिक प्रका.दिल्ली.
32) हिन्दी गजल के प्रमुख हस्ताक्षर (दुष्यन्त कुमार के विशेष संदर्भ में)-डॉ.मधु खराटे, विद्या प्रका. कानपुर.

प्रश्नपत्र क्र.6 :- विशेष स्तर : भाषा विज्ञान, समाज भाषा विज्ञान तथा हिन्दी भाषा

उद्देश्य :-

1) भाषा विज्ञान की नव्यतम शाखा के अध्ययन के साथ – साथ हिन्दी भाषा के गठन और व्यवहार को समझाना.
2) समाजभाषा विज्ञान की धारणा से अवगत होना.
3) हिन्दी भाषा के उद्भव और विकास को समझना.

पाठ्यक्रम :-

1) भाषा विज्ञान का परम्परागत एवं आधुनिक स्वरुप, भाषा विज्ञान की उपशाखाओं – कोशविज्ञान, व्युत्पत्ति विज्ञान, लिपिविज्ञान, भाषा भूगोल का संक्षिप्त परिचय.

2) स्वन एवं स्वनिम विज्ञान – स्वन का स्वरुप, स्वनका उत्पादन, संवहन और ग्रहण, वाग्यंत्र और उच्चारण प्रक्रिया, स्वनों का वर्गीकरण, स्वर और व्यंजन, स्वरोंका वर्गीकरण, व्यंजनों का वर्गीकरण, स्वन परिवर्तन के कारण एवं दिशाएँ, स्वनिम का स्वरुप, स्वनिम का निर्धारण, स्वनिम के भेद, ध्वन्यात्मक प्रतिलेखन.

3) रुप एवं रुपिम विज्ञान – रूप (पद) की परिभाषा, संबंध तत्व और उसके भेद, धातु, प्रतिपदिक और पद, रुपिम का स्वरुप, रुपिम के भेद, रुप स्वनिम विज्ञान.

4) समाजभाषा विज्ञान का स्वरुप और क्षेत्र, चॉम्सकी एवं सपीर की समाजभाषा वैज्ञानिक मान्यताएँ, परिवेश और भाषिक व्यवहार, द्विभाषिकता, पत्रकारिता, संचार माध्यम की भाषा, भाषा, समाज और संस्कृति.

5) प्राचीन भारतीय आर्यभाषा – वैदिक और लौकिक संस्कृत, मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा (क) पालि, (ख) प्राकृत, प्राकृत के प्रमुख भेद, शौरसेनी, मागधी, अर्धमागधी, महाराष्ट्री, पैशाची (ग) अपभ्रंश–विशेषताएँ और प्रमुख भेद, आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ – स्त्रोत एवं विकास.

6) हिन्दी की बोलियाँ – वर्गीकरण तथा सामान्य परिचय, खडीबोली, ब्रज, अवधी, दक्खिनी हिन्दी का ध्वन्यात्मक और पदात्मक संक्षिप्त परिचय.
7) हिन्दी शब्द निर्माण – उपसर्ग, प्रत्यय, समास.
8) हिन्दी भाषा के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा अव्यय का विकासात्मक अध्ययन.
9) हिन्दी भाषा की व्याकरणिक संरचना – स्वर, व्यंजन, लिंग, वचन, एवं कारक का परिचय.
10) देवनागरी लिपि – विशेषताएँ, सुधार के प्रयत्न, देवनागरी लिपि का मानक रुप.

संदर्भ ग्रंथ :-

1) आधुनिक भाषा विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी.
2) हिन्दी भाषा – डॉ. भोलानाथ तिवारी.
3) हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास – डॉ. उदयनारायण तिवारी.
4) हिन्दी की ग्रामीण बोलियाँ – डॉ. हरदेव बाहरी.

प्रश्नपत्र क्र.7 : विशेषस्तर – हिन्दी साहित्य का इतिहास.

उद्देश्य :-

1) युगीन परिस्थीतियों के संदर्भ मे साहित्य के इतिहास के काल विभाजन और नामकरण की जानकारी देना.

2) आदिकालीन, भक्तिकालीन, रीतिकालीन और आधुनिक काल के प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियों की जानकारी तथा प्रमुख प्रतिनिधि कवियों एवं गद्यकारों की रचनाओं का साहित्यक परिचय देना.

पाठ्यक्रम :-

(अ) आदिकाल :-

1) हिन्दी साहित्य का काल विभाजन और नामकरण के आधार, भाषा साहित्य, प्रथम साहित्यकार.
2) आदिकाल के विविध नाम – चारणकाल, सिध्द सामंत काल, वीरगाथाकाल और नामकरण के आधार.
3) आदिकालीन सामाजिक, धार्मिक, राजनितिक और साहित्यिक परिस्थीतियाँ और उनका साहित्य पर प्रभाव.
4) रासो साहित्य परंपरा – रासो शब्द के अर्थ, रासो के प्रकार पृथ्वीराज रासो की कथ्यगत और शैलीगत विशेषताएँ.
5) अपभ्रंश साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ और उनका हिन्दी साहित्य पर प्रभाव.
6) सिध्द साहित्य का परिचय और उसकी प्रमुख प्रवृत्तियाँ.
7) नाथपंथी साहित्य की विषय और शैलीगत प्रवृत्तियाँ.
8) गोरखनाथ, विद्यापति और अमीर खुसरो का साहित्यिक परिचय.

(आ) भक्तिकाल :-

9) भक्ति आंदोलन का सामान्य परिचय और विविध संप्रदाय.
(इस पर परीक्षा में प्रश्न नहीं पूछे जायेंगे)
10) भक्तिकालीन सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, साहित्यिक परिस्थीतियाँ और उनका साहित्य पर प्रभाव.
11) निर्गुण भक्तिसाहित्य की प्रवृत्तियाँ, निर्गुण भक्तिमार्ग के दो भेद – प्रेममार्ग एवं ज्ञानमार्ग – दोनों की परंपरा एवं प्रमुख प्रवृत्तियाँ.
12) ज्ञानमार्ग के प्रतिनिधि कवि कबीर का साहित्यिक परिचय.
13) प्रेममार्ग के प्रतिनिधि कवि जायसी का साहित्यिक परिचय.

14) सगुण भक्ति साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, सगुण भक्तिमार्ग के दो भेद – रामभक्ति एवं कृष्णभक्ति, दोनों की परंपरा एवं प्रवृत्तियाँ.

15) रामभक्ति साहित्य के प्रतिनिधि कवि तुलसीदास का साहित्यिक परिचय.

16) कृष्णभक्ती साहित्य के प्रतिनिधि कवि – रसखान, सूर और मीरा का साहित्यीक परिचय.

17) नीतिकवि रहीम का साहित्यिक परिचय.

(इ) रीतिकाल :-

18) रीतिकाल के विविध नाम और उनके आधार.

19) रीतिकालीन सामाजिक, धार्मिक , राजनितिक और साहित्यिक परिस्थीतियाँ और उनका साहित्य पर प्रभाव.

20) रीतिकालीन साहित्य की विषय और शैलीगत प्रवृत्तियाँ.

21) रीतिबध्द, रीतिसिध्द और रीतिमुक्त काव्यधाराओं का परिचय.

22) आचार्यत्व और कवित्व की परंपरा.

23) रीतिकालीन कवियों का साहित्यिक परिचय – केशवदास, देव, चिंतामणि, भिखारीदास, बिहारी, घनानंद, भूषण, सेनापति, मतिराम, पद्माकर.

(ई) आधुनिक काल :-

24) स्वातंत्र्योत्तर परिस्थीतियाँ – सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक आर्थिक, साहित्यीक परिस्थितियाँ एवं उनका साहित्य पर प्रभाव.

25) उपन्यास विधा का विकास – प्रेमचन्द पूर्व युग, प्रेमचन्द युग, प्रेमचन्दोत्तर युग.

26) कहानी विधा का विकास – स्वतंत्रतापूर्व, स्वातंत्रयोत्तर युग.

27) नाटक विधा का विकास – प्रसादपूर्व युग, प्रसाद युग, प्रसादोत्तर युग.

28) एकांकी विधा का विकास – स्वतंत्रतापूर्व , स्वातंत्रयोत्तर युग.

29) निबंध विधा का विकास – भारतेन्दुयुग, द्विवेदीयुग, शुक्लयुग, शुक्लोत्तर युग.

30) संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रावर्णन, रिपोर्ताज का विकासात्मक अध्ययन.

31) आलोचना का विकास – भारतेन्दुयुगीन, द्विवेदीयुगीन, द्विवेदीयुगोत्तर.

32) हिन्दी पत्रकारिता का विकासात्मक अध्ययन और भारतेन्दु, महावीरप्रसाद द्विवेदी, माखनलाल चतुर्वेदी, गणेश शंकर विद्यार्थी, कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर के योगदान का अध्ययन.

33) भारतेन्दुयुगीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ.

34) द्विवेदीयुगीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ.

35) राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा एवं मैथिलीशरण गुप्त, रामधारीसिंह दिनकर, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा, नवीन सुभद्राकुमारी चौहान का योगदान.

36) छायावाद की प्रेरक परिस्थीतियाँ, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, छायावाद की बृहदत्रयी और लघुत्रयी.

37) प्रगतिवाद – प्रेरक परिस्थीतियाँ, प्रमुख विशेषताएँ.

38) प्रयोगवाद – प्रेरक कारण, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, प्रयोगवाद और नई कविता.

(आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल पर वस्तुनिष्ठ वैकल्पिक प्रश्नों के लिए 10 अंक एवं आधुनिक काल पर 10 अंक का प्रश्न होगा).

1) हिन्दी साहित्य का इतिहास - रामचन्द्र शुक्ल.
2) हिन्दी साहित्य की भूमिका, उद्‌भव , विकास - डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी.
3) हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय.
4) हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ - डॉ. जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल.
5) हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास - बाबू गुलाबराय.
6) हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास - डॉ. रामकुमार वर्मा.
7) हिन्दी रीति साहित्य - डॉ. भगीरथ मिश्र.
8) हिन्दी साहित्य का इतिहास - स.डॉ. नगेन्द्र.
9) हिन्दी साहित्य का आदिकाल - हजारीप्रसाद द्विवेदी.
10) हिन्दी गद्य का उद्‌भव और विकास - डॉ. उमेश शास्त्री.
11) हिन्दी का गद्य साहित्य - रामचन्द्र तिवारी.
12) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य - रामरतन भटनागर.
13) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक - डॉ. रीता कुमार.
14) प्रतिनिधि हिन्दी निबंधकार - डॉ. विभुराम मिश्र.
15) हिन्दी के प्रतिनिधि निबंधकार - डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना.
16) हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. माधव सोनटक्के.
17) आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास - डॉ. श्रीकृष्णलाल.
18) हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी.
19) हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. देवीशरण रस्तोगी.
20) हिन्दी साहित्य का प्रवृत्तिपरक इतिहास - डॉ. सभापति मिश्रा.
प्रका. विनय प्रकाशन, कानपुर.
21) हिन्दी साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास - डॉ. कृष्णलाल हंस.
22) आधुनिक साहित्य का इतिहास - डॉ. बच्चन सिंह.
23) मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य मे धर्मनिरपेक्षता - डॉ. कृष्णा पोतदार.
प्रका. विद्या प्रकाशन , कानपूर.
24) साहित्ययात्रा - डॉ. मनोहर सराफ, प्रा.श्रीमती रेखा गाजरे प्रा.श्रीमती कांता राठी,
प्रका. अजिंठा एज्युकेशनल सप्लायर्स,भुसावळ.
25) हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. सज्जनराम केणी, निराली प्रकाशन, पुणे.

प्रश्नपत्र क्र.8 : वैकल्पिक – विशेषस्तर.

प्रश्नपत्र क्र.8 (क) विशेष स्तर – हिन्दी आलोचना

उद्देश्य :- छात्रों को निम्नलिखित विषयों की जानकारी देना.

1) आलोचना के स्वरूप और प्रवृत्ति का ज्ञान.
2) आलोचना के विकासक्रम का परिचय.
3) हिन्दी के प्रमुख आलोचकों की आलोचना पध्दति एवं आलोचना की तारतम्यता का बोध.
4) निर्धारित आलोचकों की आलोचना पध्दतियों के द्वारा छात्रों मे आलोचना दृष्टि का बीजवपन.

पाठ्यक्रम मे निर्धारित आलोचक :-

1) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (2) डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी.
3) आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी 4) डॉ. नगेन्द्र
5) डॉ. रामविलास शर्मा 6) डॉ.नामवर सिंह

अध्ययनार्थ विषय :-

1) आलोचना का स्वरुप एवं उद्देश्य.
2) आलोचना की प्रक्रिया.
3) आलोचक के गुण.
4) आलोचना और अनुसंधान, आलोचना और पाठालोचन, साहित्यालोचन और इतिहास लेखन.
5) आलोचना के प्रमुख प्रकार – सैध्दांतिक, व्याख्यात्मक, तुलनात्मक, ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक, प्रगतिवादी, प्रभाववादी, स्वच्छन्दतावादी.
6) हिन्दी आलोचना का विकासक्रम.
7) हिन्दी आलोचना और सृजनशील साहित्य.
8) निर्धारित आलोचकों में से आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की आलोचना पध्दतियों का अध्ययन, साम्य एवं वैषम्य.
9) आधुनिक हिन्दी आलोचना में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का स्थान.
10) आचार्य नंददुलारे वाजपेयी की समन्वयशील आलोचना.
11) डॉ. नगेन्द्र की आलोचना पध्दति.
12) डॉ. रामविलास शर्मा और मार्क्सवादी आलोचना.
13) डॉ. नामवरसिंह की आलोचना पध्दति एवं उनका हिन्दी आलोचना में योगदान.

संदर्भ ग्रंथ :-

1) हिन्दी आलोचना उद्भव और विकास – भगवत् स्वरूप मिश्र प्र. साहित्य सदन देहरादून.
2) हिन्दी के विशिष्ट आलोचक – नंदकुमार राय , वसुमति प्रका. इलाहाबाद.
3) हिन्दी की सैध्दांतिक आलोचना – रूपकिशोर मिश्र प्र. अनुभव, कानपुर.
4) हिन्दी समीक्षा स्वरूप और संदर्भ – रामदरश मिश्र. प्र. मैकमिलन, नई दिल्ली.
5) हिन्दी आलोचना का इतिहास – रामदरश मिश्र प्र.काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी.
6) हिन्दी आलोचना की परंपरा और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल – शिवकुमार मिश्र, वाणी प्रकाशन,दिल्ली.
7) डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी – सं.विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, नेशनल दिल्ली.
8) डॉ.नगेन्द्र के आलोचना सिध्दांत – द्रौदि नारायण प्रसाद, नेशनल देहली.
9) डॉ. रामविलास शर्मा – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, वाणी प्रका. दिल्ली.
10) आलोचक रामविलास शर्मा – नत्थनसिंह, विभूति प्रका. नई दिल्ली.
11) हिन्दी आलोचना : स्वरूप और प्रक्रिया – सं. आनंद प्रकाश दीक्षित.
12) आचार्य शुक्ल के समीक्षा सिध्दांत – डॉ. रामलाल सिंह.
13) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना – डॉ. रामविलास शर्मा.
14) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी : व्यक्तित्व और साहित्य – डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त.
15) आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी : व्यक्ति और साहित्य – डॉ. रामाधार शर्मा.
16) हिन्दी आलोचना के आधार स्तंभ : डॉ. रामेश्वरलाल खण्डेलवाल.
17) दूसरी परंपरा की खोज – डॉ. नामवर सिंह.
18) स्वच्छंदतावादी समीक्षा नये आयाम – विनिलेश सिंह.
19) प्रमुख आलोचक रामप्रसाद मिश्र प्र.भारतीय ग्रंथ निकेतन, नई दिल्ली.
20) हिन्दी आलोचना – विश्वनाथ त्रिपाठी.
21) हिन्दी में तुलनात्मक आलोचक – बदरी प्रसाद.

प्रश्नपत्र क्र.8 (ख) : शैली विज्ञान

उद्देश्य :-

1) शैलीविज्ञान की परिभाषा, स्वरूप, व्याप्ति और आवश्यकता को साहित्य के संदर्भ में जानना.
2) शैलीविज्ञान के उद्गम और क्रमिक विकास से अवगत होना.
3) भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र और शैलीविज्ञान का संबंध.

पाठ्यक्रम :-

1) शैली विज्ञान की परिभाषाएँ, स्वरूप, प्रयोजन तथा अध्ययन क्षेत्र.
2) शैली विज्ञान का उद्गम और विकास, शैली-कला या विज्ञान, रीति और शैली, शैली विज्ञान और आलोचना, शैली और चयन की समस्या.
3) शैली के उपकरण - चयन, विचलन, स्थापन, अग्र, प्रस्तुतिकरण, पुनरावर्तन, सादृश्यविधान, समांतरता, प्रतीक विधान, बिंब विधान.
4) शैली विज्ञान तथा अन्य विज्ञान - भाषाविज्ञान, मनोविज्ञान, दर्शन, सौंदर्यशास्त्र, समाजशास्त्र.
5) साहित्य समीक्षा प्रणालियों में शैली विज्ञान का स्थान, शैली विज्ञान की स्वतंत्र सत्ता.
6) भारतीय काव्यशास्त्र तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिध्दांतो में शैली विज्ञान के तत्व.
7) काव्यभाषा तथा काव्येतर भाषा.
8) गद्य और पद्य साहित्य की समीक्षा में शैली की वैज्ञानिक विधि का प्रयोग.
9) शैली विज्ञान की अध्ययन प्रक्रिया, उस में भाषाशास्त्र के अंगो का उपयोग.
10) ध्वनिय शैली विज्ञान.
11) निम्नलिखित साहित्यकारों की रचनाओं का शैली वैज्ञानिक अध्ययन - बिहारी, प्रेमचन्द, जैनेन्द्रकुमार, कवि निराला, कवि अज्ञेय, कवि मुक्तिबोध, निबन्धकार पं. विद्या निवास मिश्र.

संदर्भ ग्रंथ :-

1) शैली विज्ञान का स्वरूप - गुप्तेश्वर नाथ उपाध्याय.
2) शैली विज्ञान की रूपरेखा - कृष्णकुमार शर्मा.
3) शैली विज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी.
4) रीतिविज्ञान - पं. विद्यानिवास मिश्र.
5) व्यावहारिक शैली विज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी.
6) शैली विज्ञान - सुरेशकुमार.
7) शैली विज्ञान और आलोचना की नयी भूमिका - रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव.
8) गद्यरचना - शैली वैज्ञानिक विवेचन - कृष्णकुमार शर्मा.
9) शैली विज्ञान का इतिहास - कृष्णकुमार शर्मा.
10) भारतीय शैली विज्ञान - डॉ.सत्यदेव चौधरी.
11) आधुनिक आलोचना बनाम शैली विज्ञान - कृपा शंकर सिंह.
12) शैली और शैली विज्ञान - सं.डॉ. सुरेशकुमार और रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव.
13) शैलीविज्ञान का इतिहास - पाण्डेय शशिभूषण "शीतांशु".
14) शैली विज्ञान - डॉ. नगेन्द्र.

प्रश्नपत्र क्र. 8 (ग) : अनुवाद विज्ञान.

उद्देश्य :- विद्यार्थियों को निम्नलिखित विषयों की जानकारी देना.

1) अनुवाद – परिभाषा, स्वरूप, महत्त्व और व्याप्ति.
2) अनुवाद के विविध रूप और अनुवाद की प्रक्रिया.
3) अनुवाद का सामाजिक और सांस्कृतिक पक्ष.
4) अनुवाद करते समय उभरनेवाली विविध समस्याएँ और उनका समाधान.
5) अनुवाद कार्य का क्रमिक विकास एवं अनुवाद का भाषा वैज्ञानिक पक्ष.

अध्ययनार्थ विषय :-

1) अनुवाद की परिभाषाएँ तथा स्वरूप.
2) अनुवाद की आवश्यकता एवं उद्देश्य.
3) अनुवाद – कला या विज्ञान.
4) अनुवाद का लिखित एवं मौखिक स्वरूप एवं वर्तमान काल में उसकी प्रायोगिकता.
5) अनुवाद की प्रक्रिया – मूलभाषा के पाठबोधन, लक्ष्यभाषा में विशेषताएँ, अर्थयोग, अर्थहानि, अर्थांतरण, अधिकानुवाद, न्यूनानुवाद.
6) अनुवाद का सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष.
7) अनुवाद कार्य में सहायक साधनों के उपयोग का महत्त्व – द्विभाषिक कोश, त्रिभाषिक कोश, वर्णनात्मक कोश, सूचियाँ, विषय विशेष के ग्रंथ, संयंत्र.
8) अनुवाद के प्रकार – साहित्यिक विधा के आधार पर, प्रक्रिया के आधार पर, तथा गद्य पद्य के आधार पर.
9) रचनात्मक साहित्य के अनुवाद का स्वरूप, आवश्यकता, समस्याएँ एवं सीमाएँ.
10) वैज्ञानिक और तकनीकी सामग्री के अनुवाद की आवश्यकता, स्वरूप विशेषताएँ एवं समस्याएँ.
11) अनुवाद और भाषाविज्ञान.
   (अ) भाषा विज्ञान के रूप और अनुवाद.
   (आ) अनुवाद और ध्वनिविज्ञान.
   (इ) अनुवाद और अनुलेखन.
   (ई) अनुवाद और अर्थविज्ञान.
   (उ) अनुवाद और रूप विज्ञान.
   (ऊ) अनुवाद और शब्द विज्ञान.
12) अनुवाद कार्य में शैली-विचार अनुवाद की शैली का स्वरूप एवं विशेषताएँ, सामग्री विविध शैलियों का निर्वाह अथवा परिवर्तन की संभावनाएँ, प्रतिबध्दता एवं स्वतंत्रता का प्रश्न.
13) अनुवाद की समस्याएँ – मुहावरों, कहावतों के अनुवाद, अलंकारों के अनुवाद, काव्यानुवाद, नाटय का अनुवाद, वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद, सांस्कृतिक समस्या, शीर्षक की समस्या.
14) अनुवाद के मूल्यांकन का प्रश्न – आवश्यकता तथा निकष.

15) अनुवादक की योग्यता , कर्तव्य एवं आचार संहिता, सफल अनुवादक की कसौटियाँ.
16) हिन्दी साहित्य में अनुवाद कार्य की परंपरा का इतिहास.
17) अँग्रेजी या मराठी गद्यखंड का हिन्दी में अनुवाद (गद्यखंड वैचारिक निबंध से उद्धृत होगा एवं लगभग 150 शब्दों का होगा).

संदर्भ ग्रंथ :-

1) अनुवाद विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी.
2) अनुवाद कला : कुछ विचार - आनंद प्रकाश खेमानी.
3) अनुवाद कला – वासुदेव शास्त्री.
4) अनुवाद : सिध्दांत और व्यवहार – एस. के. शर्मा.
5) अनुवाद की व्यावहारिक समस्याएँ – डॉ. भोलानाथ तिवारी.
6) विशेषीकृत भाषा और अनुवाद – गोपाल शर्मा.
7) काव्यानुवाद की समस्याएँ – महेन्द्र चतुर्वेदी, डॉ. ओमप्रकाश गाबा.
8) अनुवाद विज्ञान स्वरूप एवं व्याप्ति – सं.डॉ. सु.ब. शहा, डॉ. पीतांबर सरोदे.
9) अनुवादकला और समस्याएँ – प्र. वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक ग्रंथालय.
10) अनुवाद सिध्दांत एवं स्वरूप – डॉ. मनोहर सराफ, डॉ. शिवाकांत गोस्वामी.

प्रश्नपत्र क्र. ८ (घ) : सौंदर्यशास्त्र – भारतीय एवं पाश्चात्य.

उद्देश्य :– विद्यार्थियों को निम्नलिखित विषयों की जानकारी देना.

1) सौंदर्यशास्त्र का भारतीय एवं पाश्चात्य स्वरूप.
2) सौंदर्यशास्त्र का अन्य विद्याशाखाओं से संबंध.
3) सौंदर्यशास्त्र की व्याप्ति – विविध कलाओं के साथ संबंध.
4) सौंदर्यशास्त्र के उपादान तथा सौंदर्यानुभूति और आनंदानुभूति का स्वरूप.
5) हिन्दी में सौंदर्यशास्त्र विषयक विचार.

पाठ्यक्रम :–

1) सौंदर्यशास्त्र – स्वरूप एवं व्याप्ति भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टिकोण, सौंदर्यशास्त्र का अन्य विद्याशाखाओं से संबंध – दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान, जीव विज्ञान, समाजशास्त्र कला, विज्ञान, साहित्य एवं काव्यशास्त्र सौंदर्यशास्त्र विषयक चिंतन के ऐतिहासिक विकास का परिचय.
2) सौंदर्य की परिभाषा एवं स्वरूप – व्यक्तिनिष्ठ तथा वस्तुनिष्ठ संदर्भ में सौंदर्य के अभिव्यंजक पर्यायवाची शब्द तथा उनका औचित्य.
3) सौंदर्य और कला का अंतःसंबंध, कलाओं का वर्गीकरण और सौंदर्य दृष्टी, सत्यं, शिवं सुंदरम् विषयक संकल्पना, सौंदर्य के उपादान – कल्पना, बिंब, प्रतीक सौंदर्य की कलावादी दृष्टि.
4) सौंदर्यानुभूति – सौंदर्यबोध तथा रसानुभूति, विशिष्ट पुनः प्रत्यय और सौंदर्य बोध, अनुभूति का प्रत्यक्षीकरण और सौंदर्यबोध, रुप तथा भाषा और सौंदर्यबोध, सौंदर्यानुभूति और आनंदानुभूति, कविता तथा अन्य साहित्य विधाओं के सौंदर्यशास्त्राधारित अनुशीलन की आवश्यकता.
5) भारतीय साहित्य में सौंदर्यशास्त्र विषयक विचार सूत्र और उसके प्रमुख विचारों का दृष्टिकोण – (अ) वैदिक साहित्य (आ) रामायण, महाभारत, (इ) मध्ययुगीन संस्कृत साहित्य (ई) भक्ति साहित्य (उ) हिन्दी में सौंदर्यशास्त्र विषयक चिंतन – ग्रंथ एवं लेखों के आधार पर.
6) भारतीय काव्यशास्त्र का सौंदर्यशास्त्रीय पक्ष, निम्नलिखित आचार्यों के मंतव्यों के आधार पर –

1)	भरतमुनि	2)	भामह	3)	दंडी
4)	वामन	5)	आनंदवर्धन	6)	अभिनव गुप्त
7)	पंडितराज जगन्नाथ	8)	क्षेमेन्द्र.		

7) पाश्चात्य सौंदर्यशास्त्र का विकास और पाश्चात्य विचारक –
(अ) प्रारंभिक काल (आ) मध्य प्लेटोवाद (इ) सौंदर्यशास्त्र की बुध्दिवादी धारा. (ई) आंग्ल अनुभववादी सौंदर्यशास्त्र (उ) जर्मन प्रत्ययवाद और सौंदर्य संयोजन (ऊ) बीसवी शताब्दी के सौंदर्यशास्त्र विषयक प्रमुख वाद.
8) पश्चीमी विद्वानों का सौंदर्यशास्त्र विषयक दृष्टिकोण.

1)	हीगेल	2)	क्रोचे	3)	काण्ट	4)	लौंजाइनस
5)	कॉलरिज	6)	मार्क्स	7)	टॉलस्टाय	8)	लैंगर.

9) हिन्दी की कुछ कृतियों का सौंदर्यशास्त्रीय दृष्टिकोण से आस्वादन –
(अ) सूरदास के वात्सल्य रस संपूर्ण पद (आ) रामचरितमानस का अयोध्याकांड (इ) बिहारी के शृंगाररस पूर्ण दोहे. (ई) राम की शक्ति पूजा.

संदर्भ ग्रंथ :–

1) सौंदर्यशास्त्र के तत्व – डॉ. कुमार विमल.
2) कला विवेचन – डॉ. कुमार विमल.
3) सौंदर्यतत्व – डॉ. सुरेन्द्रनाथ गुप्त.
4) रससिध्दांत और सौंदर्यशास्त्र – डॉ. निर्मला जैन.
5) सौंदर्यशास्त्र – श्री. रामाश्रय शुक्ल "करुणेन्दु"
6) मार्क्सवादी सौंदर्यशास्त्र – सं. कमलाप्रसाद, मैनेजर पांण्डेय, ज्ञानरंजन.
7) भारतीय सौंदर्यशास्त्र की भूमिका – डॉ. फत्तेहसिंह.
8) भारतीय सौंदर्यशास्त्र का तात्त्वीक विवेचन एवं ललित कलाएँ – डॉ. रामलखन शुक्ल.
9) भारतीय सौंदर्यशास्त्र की भूमिका – डॉ. नगेन्द्र.
10) अथा तो सौंदर्य जिज्ञासा – डॉ. रमेश कुंतल मेघ.
11) काव्य में सौंदर्य और उदात्त तत्व – श्री शिवबालक राय.
12) सौंदर्यतत्व निरुपण – एस.टी. नरसिंहाचारी.
13) सौंदर्यतत्व और काव्य सिध्दांत – डॉ. सुरेन्द्र बारलिंगे, अनुवादक, मनोहर काळे.

मराठी ग्रंथ :–

14) सौंदर्यशास्त्र – डॉ. रा.भा. पाटणकर.
15) सौंदर्यानुभव – श्री. प्रभाकर पाध्ये.
16) सौंदर्य आणि साहित्य – श्री. बा.सी. मर्ढेकर.

प्रश्नपत्र क्र.8 (ब) : प्रयोजनमूलक हिन्दी.

उद्देश :- विद्यार्थियों को निम्नलिखित विषयों की जानकारी देना.

1) हिन्दी भाषा की प्रमुख प्रवृत्तियों और प्रयोजनमूलक शैलियों का परिचय.
2) देवनागरी लिपि का स्वरुप और विशेषताएँ तथा आधुनिक तकनीकों की दृष्टि से उसकी उपयुक्तता, भारतीय अंको का स्वरुप और अंतराष्ट्रीय रुप.
3) हिन्दी की शुध्द वर्तनी का स्वरुप.
4) पारिभाषिक शब्दावली की उपयुक्तता.
5) राजभाषा विषयक सरकारी निति का क्रमिक परिचय, पत्रलेखन के विविध प्रकार टिप्पणि लेखन संक्षेपण.

पाठ्यक्रम :-

1) हिन्दी भाषा की प्रवृत्तियाँ – साहित्यिक, प्रशासनिक, वैज्ञानिक, व्यावसायिक बोलचाल संबंधी.
2) हिन्दी की प्रयोजनमूलक शैलियाँ – संवाद शैली, पत्र लेखन शैली, विवरणात्मक शैली.
3) देवनागरी लिपि – स्वरुप, गुण-दोष, सुधार, मानक वर्णमाला, टंकण, मुद्रण, संगणकीय दृष्टी से देवनागरी
4) अंक – नागरी अंक, भारतीय अंको के अंतराष्ट्रीय रुप, अंको की वर्तनी, शुध्द लेखन.
5) वर्तनी विषयक समस्याएँ, मानक रुप देने के प्रयास, भारत सरकार शिक्षा मंत्रालय, केन्द्रीय निदेशालय के वर्तनी संबंधी नियम. वर्तनी – वर्ण, शब्द, अनुस्वार, अनुनासिक, ह्रस्व, दीर्घ, उपसर्ग, प्रत्यय, संधि वय समास संबंधी अशुध्दियाँ और उनका शुध्दीकरण.
6) अशुध्दियों का शुध्दीकरण – संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय आदि के प्रयोग एवं रुपरचना संबंधी भूलें, पदक्रम, कर्ता-क्रिया के अन्वय, विशेषण – विशेष्य के अन्वय संबंधी भूले.
7) पारिभाषिक शब्दावली – आवश्यकता, शब्द निर्माण की विभिन्न प्रवृत्तियाँ, शब्द निर्माण प्रक्रिया, अशुध्दियों के प्रकार वाक्यो में सही प्रयोग.
8) राजभाषा हिन्दी विषयक सरकारी नीति. आरंभ से आजतक विकास के चरण, विविध कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग की स्थिति.
9) कार्यालयीन पारिभाषिक शब्दावली, वाक्य एवं वाक्यांश, वाक्यों में प्रयोग.
10) व्यापारिक पत्र लेखन – स्वरुप, प्रकार –
1) पूछताछ, माल , सुविधाएँ मूल्यसूची, शर्ते 2) आदेश, माल के आदेश प्राप्त करने, देने, रद्द करने आदि के पत्र उत्तर-प्रत्युत्तर 3) संदर्भ या परिचय पत्र 4) शिकायती पत्र – माल न भेजने, कम भेजने, घटिया या खराब भेजने, खराब संवेष्टन, विलंब, अधिक मूल्य आदि के सम्बन्ध में 5) तकादे या भुगतान संबंधी पत्र 6) सारव पत्र 7) आढत या एजेन्सी संबंधी पत्र

11) आवेदन या प्रार्थना पत्र –
1) नौकरी के लिए 2) कार्यालयीन छुट्टी (छुट्टीयों के विविध प्रकार) ,स्थानांतरण, स्थायीकरण, पदनाम, कार्य परिवर्तन, सरकारी मकान आवंटन सम्बन्धी 3) वेतन तथा धन संबंधी – वेतन, वेतन वृध्दी, अतिरिक्त वेतन, भत्ता, समयोपरिभत्ता, विशेष वेतन, पदोन्नति, वरिष्ठता, भविष्य निधि, अग्रिम धन, विविध भुगतानों से संबंधित आवेदन पत्र.

12) सरकारी पत्राचार – स्वरुप, विविध प्रकार और उनके प्रारुप –

1)	पत्र	2)	परिपत्र	3)	ज्ञापन	4)	कार्यालय ज्ञापन
5)	कार्यालय आदेश	6)	अर्धसरकारी पत्र	7)	अनौपचारिक पत्र		
8)	पृष्ठांकन	9)	अधिसूचना	10)	संकल्प		
11)	प्रेस विज्ञप्ती, प्रेस नोट	12)	तार	13)	मितव्यय–पत्र		
14)	अनुस्मारक	15)	सूचना.				

13) टिप्पणि लेखन – उद्देश्य, सिध्दांत, विशेषताएँ, स्वरुप और प्रकार – सूक्ष्म टिप्पणी, सामान्य टिप्पण, संपूर्ण टिप्पण, अनुभागीय टिप्पण, नित्य क्रमिक टिप्पण, अनौपचारिक टिप्पण, अनुषंगिक टिप्पण.

14) संक्षेपण – उद्देश्य, संक्षेपण विधि प्रकार –
1) स्वतंत्र संक्षेपण, 2) प्रवाहमान संक्षेपण 3) तालिका संक्षेपण
4) स्वयंपूर्ण संक्षेपण.

संदर्भ ग्रंथ :–

1) भाषा और समाज – डॉ. रामविलास शर्मा.
2) भाषा और दर्शन – डॉ.रामपाल सिंह.
3) हिन्दी भाषा कुशलता – श्यामजी गोकुल वर्मा.
4) हिन्दी उच्चारण और वर्तनी – डॉ. भगवती प्रसाद.
5) पारिभाषिक शब्द संग्रह – केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, दिल्ली.
6) देवनागरी लिपि तथा हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण – केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.
7) प्रायोगिक आलेखन और टिप्पण – प्रा. विराज.
8) आदर्श कार्यालय पध्दति – मन्नूलाल त्रिवेदी
9) अभिनव पत्र व्यवहार – परमानंद गुप्त.

प्रश्नपत्र क्र. 8 (छ) : लोकसाहित्य.

उद्देश्य :- विद्यार्थियों को निम्नलिखित विषयों की जानकारी देना.

1) लोकसाहित्य के स्वरूप को समझते हुए उसके अध्ययन का महत्व स्पष्ट करना.
2) लोकसाहित्य की विविध विधाओं के अध्ययन द्वारा लोकजीवन में उसकी व्यापकता को समझाना.
3) लोकसाहित्य का सामाजिक, राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक महत्व बताकर उसके विशेष अध्ययन के लिए प्रेरणा देना.

पाठ्यक्रम :-

1) "लोक" शब्द की व्याख्या, लोकसाहित्य की प्रमुख परिभाषाएँ, लोक साहित्य का वर्गीकरण, लोकसाहित्य और शिष्ट साहित्य में साम्य और वैषम्य, लोकसाहित्य के अध्ययन का महत्व लोकवार्ता.
2) लोकसाहित्य का अन्य शास्त्रों से संबंध - इतिहास, पुरातत्व, मानव-विज्ञान, समाजविज्ञान, मनोविज्ञान, भाषाविज्ञान, धर्मशास्त्र.
3) लोकसाहित्य का संकलन - उद्देश्य, विभिन्न पध्दतियाँ और बाधक तत्व.
4) लोकगीत - परिभाषा, निर्माण तत्व, विशेषताएँ, लोकगीतों का वर्गीकरण, लोकगीतों और साहित्यिक गीतों में अंतर, लोकगीतों के प्रमुख प्रकार - सोहर, विवाह, गौना, कजली, होली, लोरी, लावणी.
5) लोकगाथा - उत्पत्तिविषयक सिध्दांत, प्रमुख लक्षण, लोकगाथाओं का वर्गीकरण, आल्हा, मोरा-बादल, भरथरी की लोकगाथा का सामान्य परिचय.
6) लोककथा - लोककथा के मूल स्त्रोत, लोककथा का स्वरूपएवं वर्गीकरण, लोककथा व्युत्पत्ति विषयक विविधवाद, लोककथा और साहित्यिक कहानी में अंतर, लोककथा में अभिप्राय, लोककथा की विशेषताएँ.
7) लोकनाट्य - भारत में लोकनाट्य की परंपरा, लोकनाट्य की विशेषताएँ, लोकनाट्य और साहित्यिक नाटक में अंतर, लोकरंगमंच, भारत के प्रमुख लोकनाट्य - रामलीला, रासलीला, भवई, यक्षगान, तमाशा, जत्रा, माँच, नौटंकी, कुचिपुडी, ललित, ख्याल.
8) प्रकीर्ण साहित्य - मुहावरें, कहावतें, पहेलियाँ, मुकरियाँ, ढकोसला, मंत्र, टोना-टोटका.
9) लोकसाहित्य - भाषाभिव्यक्ति और कलात्मक सौंदर्य.
10) लोकसाहित्य का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय महत्व.

संदर्भग्रंथ :-

1) भारतीय लोकसाहित्य - डॉ. श्याम परमार.
2) लोकसाहित्य की भूमिका - डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय.
3) लोकसाहित्य सिध्दांत और प्रयोग - डॉ. श्रीराम शर्मा.
4) लोकसाहित्य के प्रतिमान - डॉ. कुंदनलाल उप्रेति.

5) खड़ी बोली का साहित्य – डॉ. सत्या गुप्त.
6) लोकसाहित्य विज्ञान – डॉ. सत्येन्द्र.
7) लोकवार्ता और लोकगीत – डॉ. सत्येन्द्र.
8) लोकसाहित्य का अध्ययन – डॉ. त्रिलोचन पाण्डेय.
9) महाराष्ट्र का हिन्दी लोककाव्य – डॉ. कृष्ण दिवाकर.
10) लोकगीतों का विकासात्मक अध्ययन – डॉ. कुलदीप.
11) लोकगीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि – डॉ. विद्या चौहान.
12) हमारे संस्कार गीत – राजरानी वर्मा.
13) लोककथा परिचय – नलिन विलोचन शर्मा.
14) लोककथा विज्ञान – श्रीचन्द्र जैन.
15) लोकधर्मी नाट्य परंपरा – डॉ. श्याम परमार.
16) लोकनाट्य – परंपरा और प्रवृत्तियाँ – डॉ. महेन्द्र भानावत.
17) भारत के लोकनाट्य – डॉ. शिवकुमार मधुर.
18) महाराष्ट्र का लोक धर्मी नाट्य – डॉ. दुर्गा दीक्षित.
19) लोक साहित्य – इंद्रदेव सिंह.
20) लोकसाहित्य विमर्श – डॉ. श्याम परमार.
21) भारतीय लोकसाहित्य की रुपरेखा – दुर्गा भागवत अनु. डॉ. स्वर्णकोला.

अंतरी पेटवू ज्ञानज्योत

उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगांव

एम.ए. हिन्दी द्वितीयवर्ष प्रश्नपत्र का प्रारुप एवं अंक विभाजन

प्रश्नपत्र क्र.5 सामान्यस्तर - आधुनिक काव्य.

1) निर्धारित पाँचो पाठ्यपुस्तकों पर आधारित कुल पाँच प्रश्न पूछे जायेंगे. प्रथम चार प्रश्नों का प्रारुप अंतर्वैकल्पिक होगा जिनमें प्रत्येक प्रश्न के लिए 20 अंक होंगे.

2) पाँचवा प्रश्न अनिवार्य होगा. यह प्रश्न संसंदर्भ व्याख्या का होगा. प्रत्येक पाठ्यपुस्तक पर एक अवतरण होगा पाँच अवतरण पूछे जायेंगे जिनमेंसे किन्ही तीन की संसंदर्भ व्याख्या परीक्षार्थी को लिखनी है. यह प्रश्न 20 अंक का होगा.

3) इस प्रकार प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का होगा. पाँचो प्रश्न मिलकर कुल अंक 100.

प्रश्नपत्र क्र.6 :- विशेषस्तर - भाषा विज्ञान, समाज भाषा विज्ञान तथा हिन्दी भाषा.

1) इस प्रश्न पत्र में "अ" और "ब" दोन विभाग होंगे दोनों ही विभागों के उत्तर एक ही उत्तर पत्रिका में लिखना है. विभाग "अ" में भाषा विज्ञान तथा समाजभाषा विज्ञान पर चार प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमेंसे परीक्षार्थी को दो प्रश्नों के उत्तर लिखना है.

2) विभाग "ब" मे 5 प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमे से परीक्षार्थी को तीन प्रश्नों के उत्तर लिखना है.

3) इस प्रकार प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का होगा और पाँचो प्रश्नों के कुल अंक 100 होंगे.

प्रश्नपत्र क्र.7 :- विशेषस्तर : हिन्दी साहित्य का इतिहास.

1) इस प्रश्नपत्र में "अ" और "ब" दो विभाग होंगे दोनों ही विभागों के उत्तर एक ही उत्तर पत्रिका में लिखना है. विभाग "अ" मे आदिकाल भक्तिकाल और रितिकाल पर कुल 8 प्रश्न दिये जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को दो प्रश्न के उत्तर लिखना है. चार प्रश्नों में प्रत्येक काल पर एक प्रश्न होना चाहिए.

2) विभाग "ब" में पाँच प्रश्न होंगे जिनमें से परीक्षार्थी को तीन प्रश्नों के उत्तर लिखना है. अंतिम प्रश्न अनिवार्य होगा. चार प्रश्नों में गद्य और पद्य (आधुनिक काल) पर प्रश्न होंगे. अंतिम प्रश्न अनिवार्य है जिसमें आदिकाल, भक्तीकाल, रीतिकाल पर पाँच प्रश्न 5 अंको के एवं आधुनिक काल पर 5 प्रश्न 5 अंको के इस प्रकार कुल 10 प्रश्न वस्तुनिष्ठ वैकल्पीक पूछे जायेंगे. सभी करने होंगे एवं दो अंक प्रति प्रश्न के अनुसार 20 अंक होंगे.

3) इस प्रकार कुल पाँच प्रश्न पूछे जायेंगे प्रत्येक को 20 अंक के अनुसार कुल अंक 100 होंगे.

प्रश्नपत्र क्र. 8(क) :- विशेष स्तर : हिन्दी आलोचना.

1) इस प्रश्नपत्र में दो विभाग होंगे "अ" और "ब" दोनों विभागों के उत्तर एक ही उत्तर पत्रिका में लिखना है. विभाग "अ" मे चार प्रश्न पुछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को दो प्रश्न के उत्तर लिखना है. ये प्रश्न आलोचना विधा के सैध्दांतिक पक्ष पर होंगे.

2 विभाग "ब" मे 6 प्रश्न दिये जायेंगे जिनमे से तीन प्रश्नों के उत्तर लिखना है ये प्रश्न पाठ्यक्रम में निधारित छः आलोचकों पर होंगे .

3) कुल पाँच प्रश्न होंगे प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का कुल अंक 100 होंगे.

प्रश्नपत्र क्र.8 (ख) :- शैली विज्ञान.

1) इस प्रश्नपत्र में कुल 9 प्रश्न दिये जायेंगे जिनमे परीक्षार्थी को 5 प्रश्नों के उत्तर लिखना है. पाठ्यक्रम में निधारित साहित्यकारों की रचनाओं का शैली वैज्ञानिक अध्ययन पर दो प्रश्न पूछना आवश्यक है.

2) कुल पाँच प्रश्न होंगे. प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का होगा कुल अंक 100.

प्रश्नपत्र क्र.8 (ग) :- अनुवाद विज्ञान.

1) इस प्रश्नपत्र में कुल 9 प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखना है.

2) प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का होगा . पाँच प्रश्नों के कुल अंक 100.

प्रश्नपत्र क्र.8 (घ) सौंदर्यशास्त्र भारतीय एवं पाश्चात्य.

इस प्रश्न पत्र का प्रारुप एवं अंक विभाजन 8(ग) के अनुसार ही होगा.

प्रश्नपत्र क्र.8 (च) प्रयोजन मूलक हिन्दी.

इस प्रश्नपत्र का प्रारुप एवं अंक विभाजन 8(ग) एवं 8(घ) के अनुसार ही होगा.